आभार प्रदर्शन

हिन्द की वसुन्धरा पर पूर्वजरूपी भरत जी के सरजमी को प्रणाम करते हुए मैं अपना विचार प्राचीन इतिहास के माध्यम से आप तक पहुँचाने में आपके आदेशों का अंगीकार करना चाहता हूँ।

गंगा यमुना की गोद में तेजस्वी भाष्कर जी जब अपनी प्रतिमा विखेरते हैं तो विन्धनगरी की महिमा में चार चाँद लग जाता है माँ विन्धेश्वरी के जय–जयकार से सारा विन्ध्यनगर स्वर्णिम दृष्य विखेरता है। इसी स्वर्णिम दृष्य में विशाल सरस्वती भवन के0 वी0 पी0 जी0 कालेज मिर्जापुर अपने आप में अद्वितीय है। इसी संस्था के **डॉ0 कृष्णमुरारी सिंह** (रीडर एवं अध्यक्ष प्राचीन इतिहास विभाग) जो मधुवन वृन्दावन परम्ईश परमात्मा भगवान श्रीकृष्ण के पर्याय के रूप में मानव के राजहंश हेतु अलंकृत हैं, आप ही के सौजन्यमयी अनुकम्पा में हम अपने विचारों को शोध के रूप में उत्प्रेरित करने के लिए आपके के अप्रतिम सानिध्य के लिए मै सत्–सत् कोटिशः प्रणाम करतें हुए आपका आभारी हूँ।

पूर्वांचल की वाटिका में जमदग्नि ऋषि के प्रताप से स्थापित जौनपुर जनपद के ग्रामांचल में सुशोभित सरस्वती का पावन धाम राजबहादुर पी0 जी0 कालेज गुलालपुर अपने आप में खुशवू समेटे हुए आशीर्वाद न्यौछावर करने में कोई कसर बाकी नहीं रखता। दिग्दिगन्तर के कालान्तर में रजनी को दूर करने वाले, ज्योति के ईश, दिनकर द्विवाकर के रूप में कर्मठ सुयोग्य मृदु–भाषी **प्राचार्य डॉ0 ज्योतिष प्रकाश यादव जी** को शोध कार्य के लिए सह निर्देशन हेतु आपकी आज्ञाओं में कृत संकल्प दिशा निर्देशन के लिए उज्जवल कामना करते हुए आभार प्रदर्शन का

प्रत्याशी हूँ।

राष्ट्रीय राजमार्ग 56 राजधानी लखनऊ से शिव नगरी वाराणसी के मध्य सिराजे–ए–हिन्द जौनपुर पूर्वांचल की दुनिया में इतिहास की गाथा गाता रहता है। पूर्वांचल विश्वविद्यालय के ललाट् तिलकधारी पी0 जी0 कालेज जौनपुर भारत के इतिहास में अग्रणी है। इसी महाविद्यालय के पूर्वजों से लेकर आधुनिक तक महाबलियों के गाथा के विद्वान शंकर भगवान ओङ्म, जिसको खुद प्रकाशित करें अर्थात् रश्मि के समान तेजस्वी परम् सम्मानित बन्दनीय गुरूदेव **डॉ0 ओम प्रकाश सिंह** (रीडर एवं विभागाध्यक्ष प्राचीन इतिहास विभाग) आपका प्रेरणात्मक श्रोत अविरल धारा से अभिसिंचित शोध कार्य आपके अनुकम्पा की देन है। अपनी श्रद्धा को पुष्पित कर ऐसे शुभकार्य के लिए आजन्म नतमस्तक होते हुए कृत्य कृत्य आभारी हूँ।

मैं अपने परम सुहृद **डॉ0 सुग्रीव यादव** (रीडर एवं विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग) जी0 आर0 पी0 जी0 कालेज, सेवरहा, फैजाबाद एवं **डॉ0 अजय सिंह** (रीडर प्राचीन इतिहास विभाग) टी0 डी0 कालेज, जौनपुर कों धन्यवाद ज्ञापित किये कैसे रह सकता हूँ, जिन्होंने मेरे गिरते हुए मनोबल को जागृत कर शोध कार्य हेतु उत्प्रेरित किया।

आधुनिक युग भौतिकता का युग कहा जाता है। भौतिक वाद के वशीभूत होकर हर मानव आवश्यकता की राह को ढूंढता है, क्योंकि मानव की आवश्यकताऐं अनन्त होने के कारण सहयोग पर आधारित हैं। इस शोध कार्य में पुस्तकीय संकलन एवं सहयोग हेतु आर0 वी0 पी0 जी0 कालेज गुलालपुर के पुस्तकालयाध्यक्ष **महेन्द्र प्रताप सिंह** का आभारी हूँ तथा स0 ब0 महाविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष **स्व0 श्री नमोनारायण शुक्ला** जी को श्रद्धांजलि देते हुए परलोक में

भी उनके शुभ–शान्ति की कामना करता हूँ।

प्राचीन इतिहास विभाग के0 वी0 पी0 कालेज, मिर्जापुर के पूज्य गुरूजनों **डॉ इन्द्रभूषण द्विवेदी, डॉ श्रीमती किरन सिंह एवं श्रीमती ऋचा श्रीवास्तव जी** के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने शोध कार्य के लिए प्रोत्साहन एवं सहयोग किया।

वेद शास्त्रों एवं धर्मग्रन्थों में प्राचीन से लेकर एवं वर्तमान समय तक माताओं का स्थान सर्वोपरि रहा है जिन्होंने संसार की बनावट में अहम भूमिका निभायी है।जिनके आशीर्वाद से हर पुत्र सुख शान्ति के अमन का लाभार्थी होता है सबसे पहले मैं अपनी ममतामयी माँ श्रीमती राजदेवी के चरणों की वन्दना करते हुए उनके आंचल की छत्र छाया अपने सिर पर रखना चाहता हूँ जिन्होंने मुझे इस लायक बनाया।

बालक नागरिकता का प्रथमपाठ माता के चुम्बन तथा पिता की देख–रेख में सीखता है बच्चों की बनावट वंशानुक्रम तथा पर्यावरण से प्रभावित होता है। संस्कार युक्त परिवार में बालक सांस्कारिक बनकर अपने बड़ों के अनुगामी होते है और देश के शासन प्रशासन में चिन्तन एवं मनन करते है तभी किसी देश का विकास सुनिश्चित होता है। आर्थिक समस्या हर मानव को जकड़े हुए है। समस्या का जो समाधान कर दे वह सफल इंसान है और स्थिति को जो [redacted] समायोजित कर दे वही भगवान हैं हमें शोध कार्य के लिए निष्पल उत्प्रेरित करने वाले तथा समाज से ऊपर उठाने वाले पूज्यनीय पिता श्री रामजीत यादव (चेयर मैन, जिला सहकारी डेयरी जौनपुर) को कोटिशः नमन करता हूँ।

जन्म से लेकर मृत्यु तक हर इंसान समस्याओं से

जूझता रहता है। समस्याएं ही बोझिल बनकर हर मानव के सामने बढ़ने लगती है। जो समस्या का समाधान कर आगे बढ़ जाता है वही इन्सान कहा जाता है इसलिए सभी पढ़ें सभी बढ़े सभी महान बनें का विचार रखने वाले तथा हमारे शोध कार्य में प्रेरणात्मक बल देने वाले पूज्यनीय चाचा **श्री बृजमोहन यादव** (सहायक अध्यापक) को प्रणाम करता हूँ।

इस शोध कार्य में सहयोग करने वाले सभी बड़े पिताजी **श्री जयनाथ यादव** चाचा **श्री राम दवर यादव** ,भाइयों सर्व **श्री रामराज यादव, रामअवध,रामपाल यादव** को प्रणाम करता हूँ तथा अनुज **वीरेन्द्र कुमार यादव, हरेन्द्र** कुमार, भतीजों राजेन्द्र कुमार, धर्मेन्द्र कुमार, जितेन्द्र कुमार, सत्यम एव शिवम, बहन रीता यादव,अनीता, नीलम, किरन, सरिता, सुनीता, मीरा, कुमकुम आदि को स्नेहिल शुभ आशीर्वाद देते हुए इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

मैं **डॉ0 अजित कुमार यादव** (विभाग–भूगोल) एवं **डा0 अनिरूद्ध कुमार यादव** (विभाग–मनोविज्ञान) पी0 कालेज गुलालपुर एवं **नन्द लाल यादव** कों सहयोग के लिए धन्यवाद, ज्ञापित करते हुए विनयावनत हूँ।

समन्वयक की सहयोग की भावना से प्रेरित होकर मैं अपने सभी मित्रों **सर्वश्री ओम प्रकाश यादव** (पुलिस उपाधिक्षक उ0प्र0), **श्री दिनेश कुमार यादव** (जिला बेसिक शिक्षाधिकारी) **राजीव शुक्ला** (शिक्षक), **कमलेश कुमार सिंह, राजकुमार यादव, संदीप शुक्ला, शशिकांत यादव, फूलचंद्र पाल, नन्दलाल यादव, विजय प्रकाश यादव** को नमस्कार प्रणाम, शुभाशिर्वाद देते हुए धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

अस्तू प्रकरणान्त में कलात्मक एवं रचनात्मक टंकण

प्रतिलिपि में निरूपित करने वाले **अमित, नीरज, बिपिन** भाई साहब को हृदय से साधुवाद देते हुए इनके रचनात्मक गतिविधियों के विकास एवं प्रचार–प्रसार के लिए मैं ईश्वर से विनीत हूँ।

अन्त में मानव की बनावट, गुण, अवगुण के समन्वय से बना है। कहा जाता है कि त्रुटि मानव का एक अंग है यदि सज्ञानता/अज्ञानता में कहीं त्रुटि मिलती हो तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

नरेन्द्र कुमार माधव